ग्रामीण परिवारों के सामाजिक विकास में जनमाध्यमों की भूमिका का अध्ययन (लखनऊ मंडल के परिप्रेक्ष्य में)

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ
के
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
में

डॉक्टर ऑफ फिलोस्फी
उपाधि हेतु

शोध संक्षेप

शोधार्थी
बृजेन्द्र कुमार वर्मा
नामांकन संख्या– 808/13

शोध पर्यवेक्षक
डॉ0 महेन्द्र कुमार पाढ़ी
सह आचार्य

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग,
सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय),
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ (उ.प्र.)।
2022

शोध संक्षेप (Abstract) –

प्राचीन समय से ही मानव संचार से जुड़कर सूचनाओं का आदान–प्रदान कर रहा है। संचार के माध्यम से ही प्रचीन समय से लेकर आज तक मानव ने अतुल्नीय विकास किया है। ज्ञान के एकत्रीकरण के आरंभ से विभिन्न विषयों को समाहित किया जाता रहा, परंतु संचार पर बहुत समय के बाद ध्यानाकर्षित किया गया। विश्व स्तर पर संचार के सम्बन्ध में जैसे ही समाजशास्त्रियों का ध्यान गया, वैसे ही संचार की शक्ति को पहचान मिलने लगी। वर्तमान में संचार और प्रौद्योगिकी ने नये–नये आयाम प्राप्त किए है। भारत में संचार क्रांति ने भारत का विश्व पटल पर एक सशक्त राष्ट्र के रूप में पहचान दी। भारत विकासशील एवं ग्रामीण बाहुल्य राष्ट्र है। 21वीं सदी में भी भारत की सर्वाधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करती है। स्वतन्त्रता के बाद से ही विभिन्न सरकारों का ध्यान ग्रामीण विकास पर गया। उस समय अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों के तर्क थे कि यदि देश का विकास करना है एवं देश की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है तो ग्रामीण क्षेत्र को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। इससे स्वतः सिद्ध हो जाता है कि ग्रामीण क्षेत्र का विकास प्रत्यक्ष रूप से भारत के संपूर्ण विकास को प्रभावित करता है। ऐसे में यहाँ कहा जा सकता है कि ग्रामीण विकास ही भारत का उचित विकास है। विकास को विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों में अलग–अलग परिधि में रखा जाता है। चूंकि भारत एक विकासशील राष्ट्र है, ऐसे में यहाँ विकास के लिए रोजगार, आय, कृषि को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है एवं उन्हीं को ध्यान में रखकर नीति निर्धारक देश के भविष्य में निर्णय भी लेते हैं।

विकास के लिए विभिन्न क्षेत्रों के साथ संचार की आवश्यकता भी पड़ती है। विभिन्न शोधों से यह सिद्ध हुआ है कि यदि किसी विकासशील राष्ट्र का विकास करना है, तो उसमें संचार की अहम भूमिका होती है। भारत के ग्रामीण विकास में भी संचार की भूमिका है। ग्रामीण क्षेत्रों पर विभिन्न विषयों में शोध हुए हैं, लेकिन जनसंचार एवं पत्रकारिता विषय ग्रामीण विकास अध्ययन के लिए नवीनतम है। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण विकास को समझने के लिए कई शोध हो चुके हैं एवं वर्तमान में भी हो रहे हैं। जनसंचार एवं पत्रकारिता में भी ग्रामीण विकास को समझना आवश्यक है। यदि यह पता चले कि ग्रामीण विकास में जनसंचार की

क्या भूमिका है, तो सरकार एवं नीति निर्धारकों को उत्तर प्रदेश के विकास को निर्धारित करने में निश्चित ही सहायता मिलेगी। प्रस्तुत शोध अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रहे परिवारों के सामाजिक विकास में जनमाध्यमों की भूमिका को पता लगाने के विशेष उद्देश्य के लिए किया गया। इस तर्क को नकारा नहीं जा सकता है कि ग्रामीण परिवारों का जुड़ाव जनमाध्यमों से है एवं जनमाध्यमों का प्रभाव उनके जीवन पर पड़ रहा है, लेकिन यह पता नहीं कि प्रभाव क्या है, जनमाध्यम क्या–क्या सहायता ग्रामीण परिवारों की कर रहे हैं, किन–किन जनमाध्यमों से ग्रामीण परिवार जुड़े हैं। कितने परिवार कौन–कौन सा जनमाध्यम पसंद करते हैं, आदि। शोधार्थी की शोध अध्ययन की समस्या इस प्रकार के प्रश्नों के साथ ही उत्पन्न हुई, जिसके उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधार्थी जिज्ञासु था एवं शोध के लिए प्रेरित हुआ।

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के लखनऊ मंडल के ग्रामीण परिवारों पर आधारित है। लखनऊ मंडल में कुल 6 जिले (लखीमपुर खीरी, हरदोई, लखनऊ, सीतापुर, उन्नाव, रायबरेली) आते हैं। शोधार्थी द्वारा मिश्रित निदर्शन विधि से कुल 900 ग्रामीण परिवारों का चयन किया गया एवं शोध अध्ययन पूर्ण किया गया। प्रथम स्तर पर सर्वप्रथम सम्भाव्यता निदर्शन (Probability Sampling) के अंतर्गत यादृच्छिक निदर्शन विधि (Simple Random Sampling) के अंतर्गत लॉटरी विधि (Lottery Method) का उपयोग करके मंडल के प्रत्येक जिले को विभाजित कर दो–दो तहसीलों का चयन किया गया। एक जिले से 150 प्रतिदर्शों का चयन किया गया, जिसके अंतर्गत शहर के पास की तहसील से 75 व ग्रामीण अथवा शहर से दूर की तहसील से 75 प्रतिदर्शों का चयन किया गया। इस प्रकार कुल 6 जिलों से 12 तहसीलों का चयन किया गया। इसके बाद इसी विधि द्वारा चयनित कुल 12 तहसीलों से प्रत्येक तहसील से 3–3 गाँवों का चयन किया गया, इस प्रकार कुल 12 तहसीलों से कुल 36 गाँवों का चयन किया गया। द्वितीय स्तर पर असम्भाव्यता निदर्शन (Non Probability Sampling) के अंतर्गत अभ्यंश निदर्शन (Quota Sampling) का उपयोग कर चयनित कुल 36 गाँवों में से प्रत्येक गाँव से 25–25 प्रतिदर्शों का कोटा निर्धारित किया गया व इसी विधि में उद्देश्यात्मक विधि (Purposive Sampling) द्वारा प्रत्येक गाँव से 25 प्रतिदर्श का चयन किया। इस प्रकार कुल 900 प्रतिदर्शों का चयन किया गया।

कुल 900 प्रतिदर्शों का चयन इस प्रकार समझा जा सकता है –

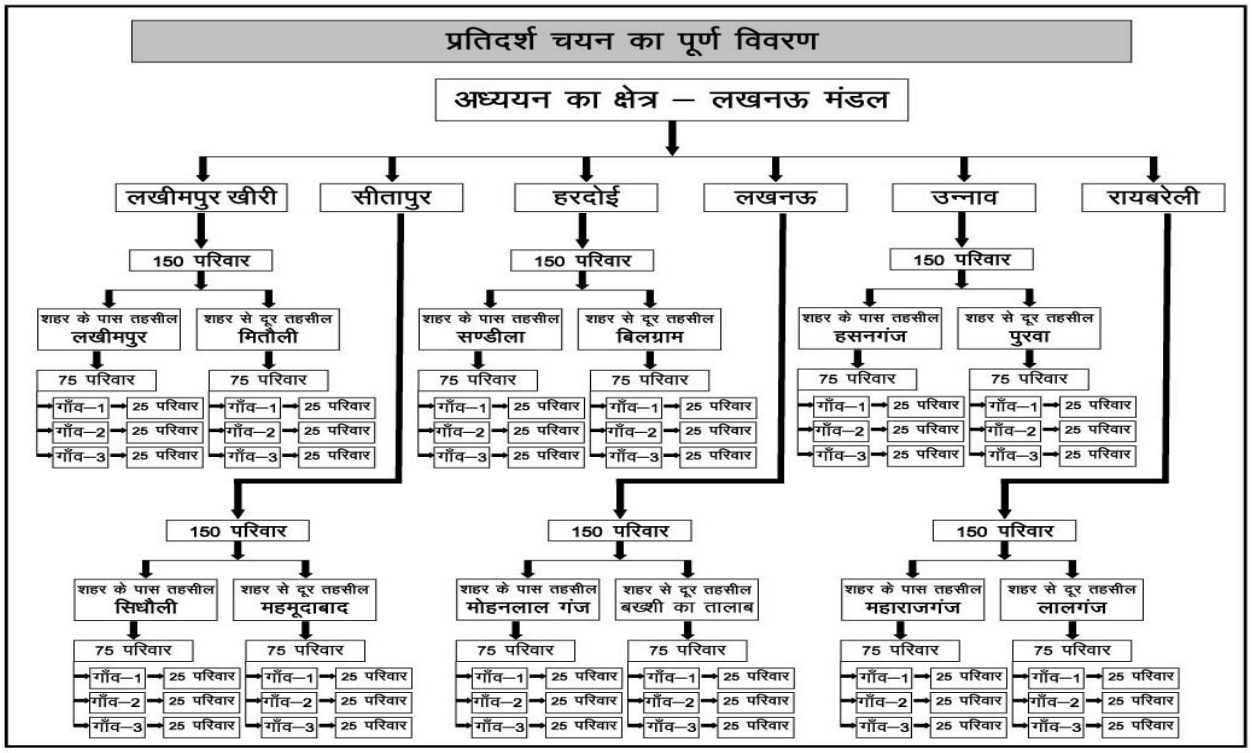

चयनित 900 ग्रामीण परिवारों के मुखियों से अनुसूची के विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया गया, जिसके बाद आंकड़ों का विश्लेषण किया गया।

आंकड़ों के विश्लेषण के लिए कुल आंकड़ों का सारणीयन किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु निर्धारित किए गए। इसमें शिक्षा, सूचना, स्वास्थ्य, जनमाध्यम, कृषि, सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन, आय, तकनीकी, जागरूकता, मनोरंजन आदि शामिल हैं। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए आंकड़ों का विभाजन किया गया, जिससे उचित उत्तर प्राप्त किए गए। इसमें कुल आंकड़ों का विश्लेषण, जनसंख्या के आधार पर आंकड़ों का विश्लेषण, भौगोलिक दृष्टि से किया गया आंकड़ों का विश्लेषण शामिल है। इसमें शहरी तहसील एवं ग्रामीण तहसीलों के ग्रामीण परिवारों से संबंधित विश्लेषण भी दिए गए। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है–

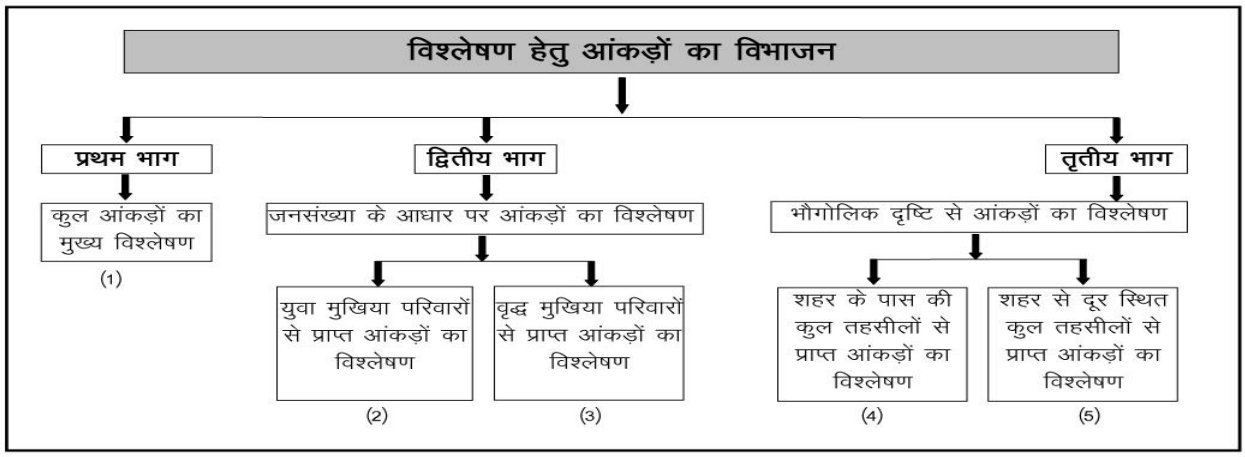

आंकड़ों के विश्लेषणों से कई उत्तर ऐसे प्राप्त हुए जो शोध अध्ययन की समस्या का समाधान करते हैं। शोध अध्ययन ग्रामीण परिवारों के सामाजिक विकास में जनमाध्यमों की भूमिका को पता लगाने के उद्देश्य से किया गया।

आंकड़ों के विश्लेषणों से यह पता चलता है कि लखनऊ मंडल के ग्रामीण परिवारों के जीवन में जनमाध्यमों की अहम भूमिका है एवं उनके जीवन पर जनमाध्यम अपना प्रभाव डालते हैं। विभिन्न विश्लेषणों से पता चलता है कि ग्रामीण परिवारों में जनमाध्यमों के प्रति लगाव है एवं तकनीकी से भी जुड़ाव बढ़ा है। ग्रामीण परिवारों पर टेलीविजन का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता है। टेलीविजन ग्रामीण परिवारों के मनोरंजन से लेकन विभिन्न सूचनाओं में अहम भूमिका निभा रहा है। इसके अलावा ग्रामीण परिवारों में 99 प्रतिशत के पास मोबाइल फोन की उपलब्धता है। विभिन्न विश्लेषणों से यह निष्कर्ष निकला कि ग्रामीण परिवारों में कृषि के प्रति रूचि कम हुई है एवं कई परिवार स्वरोजगार की ओर अग्रसर होना चाहते हैं, आय कृषि को प्रभावित कर रही है। शिक्षा के सम्बन्ध में विश्लेषणों से यह पता चलता है कि ग्रामीण परिवार अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति सजग हैं एवं जागरूक भी। ग्रामीण परिवार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए बच्चों को शहर भी भेजने को तैयार हैं। कई परिवार छात्रवृत्ति के प्रभाव से बाहर हैं, एवं किसी भी स्थिति में वे अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं। कई ग्रामीण परिवार अपने गाँव व आसपास अच्छे एवं गुणवत्तापूर्ण संस्थान खोले जाने के पक्षधर हैं। विश्लेषणों से यह भी पता चलता है कि ग्रामीण परिवारों में स्वास्थ्य के प्रति सजगता है। वे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हुए हैं, एवं बीमार होने पर अधिकतर परिवार चिकित्सक के पास जाने लगे हैं एवं अंधविश्वास

से दूर हो रहे हैं, जिसमें जनमाध्यमों का विशेष योगदान है। सूचना क्रांति ने शहरों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों को भी प्रत्यक्ष प्रभावित किया है। मोबाइल फोन के सुगम प्रयोग ने ग्रामीणों को तेज गति से अपनी ओर आकर्षित किया है। यही कारण है कि लगभग हर परिवार में मोबाइल फोन की उपलब्धता है। शिक्षा की कमी के कारण अभी कृषि में नयी–नयी तकनीकी का उपयोग भरपूर नहीं हो पा रहा है।

शोध अध्ययन में विभिन्न विश्लेषणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि जनमाध्यम ग्रामीण परिवारों की शिक्षा में, मनोरंजन में, स्वास्थ्य में, सरकारी सूचना देने में, जागरूकता में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। बिना जनमाध्यमों के उपयोग के ग्रामीण परिवारों का जीवन कठिन होगा। जनमाध्यम लगातार ग्रामीण परिवारों के जीवन को सरल बना रहे हैं एवं समय की बचत भी कर रहे हैं। तेजी से पहुँच रही सूचनाओं से ग्रामीण परिवार उचित समय में निर्णय लेने में सक्षम हो रहे हैं। अभी भी शिक्षा कमी के कारण तकनीकी को उचित उपयोग नहीं हो पा रहा है। ग्रामीण परिवारों के सामाजिक विकास के लक्ष्य को पाने के लिए ग्रामीण परिवारों में शिक्षा का उचित प्रसार एवं जागरूकता का उचित प्रसार होना आवश्यक है।